"संस्थान गान"

FINAL LYRICS

विद्या दाता गौरवशाली, सरस्वती का आंगन है
सतरंगी मुस्कान बिखेरे, उत्कृष्टता संस्थान है।
झीलों की पावन नगरी में, मोहक मंगल कानन है
नैसर्गिक मुस्कान बिखेरे, अपना ये संस्थान है।।।1।।

ऋषियों के आश्रय सा मनहर, जहाँ पढ़ाते ज्ञानी गुरूवर
यहां सुशासन की आभा है, भेदभाव का नाम नही।
प्रतिभाओं का यहां खज़ाना, मणियों में है प्रभामणी
तारों में ध्रुव तारा सा है, हम सबका अभिमान यही
विद्या दाता गौरवशाली, सरस्वती का आंगन है
सतरंगी मुस्कान बिखेरे, उत्कृष्टता संस्थान है।।2।।

शिक्षण–अधिगम में अग्रज बन, नवयुग का निर्माता है
विद्या आदर्शों को रचकर, नैतिक पाठ पढ़ाता है।
शिक्षा का सिरमौर यहां ओर, नवाचार की अभिलाषा
खेलकूद में हम हैं आगे, स्वर्णिम काल हमारा है
विद्या दाता गौरवशाली, सरस्वती का आंगन है
सतरंगी मुस्कान बिखेरे, उत्कृष्टता संस्थान है।।3।।

शिक्षा गंगा नीर यहां, जो हर दे सारी पीर यहां
कला और वाणिज्य यहां, और तकनीकी विज्ञान यहां।
अपनी जीवन यात्रा में यहां कई रत्नों का जन्म हुआ
शोध केन्द्र की क्यांरी से यहां कई पुष्पों का उदय हुआ
विद्या दाता गौरवशाली, सरस्वती का आंगन है
सतरंगी मुस्कान बिखेरे, उत्कृष्टता संस्थान है।।4।।

उत्तम है परिवेश यहां का, उत्तम ही परिधान है
संस्कृति का पावन संगम यह, इसकी ये पहचान है।
तक्षशिला नालंदा सा ही, यह परिसर भी महान है
मध्यप्रदेश का गौरव है, यह उत्कृष्टता संस्थान है।
विद्या दाता गौरवशाली, सरस्वती का आंगन है
सतरंगी मुस्कान बिखेरे, उत्कृष्टता संस्थान है।।5।।

IT cell
Pl. upload on Portal

8-8-22